

प्रकाशनार्थ।

15 जून, 2023 गोरखपुर।

सायंकालीन सैद्धान्तिक सत्र में 'नाथ योग का नैतिक आधार' विषय पर बतौर मुख्य वक्ता दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के दर्शन विभाग के आचार्य प्रो. द्वारिकानाथ ने कहा कि योग ऐसी विधा है जो जीवन के विविध पक्षों से जुड़ी हुई है। योग एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है। भगवान् गोरखनाथ एक आध्यात्मिक गुरु थे। योग समस्याओं का शाश्वत समाधान करता है। योग भौतिक जीवन में दुःख निवृत्ति के साथ ही आध्यात्मिक उन्नति का कारक बनता है। महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग में यम और नियम को आधार के रूप में वर्णित किया है उसी को और विस्तृत रूप में महायोगी गोरखनाथ जी ने प्रतिपादित किया है। पतंजलि के पाँच-पाँच प्रकार के यम और नियम को गोरखनाथ जी ने दस-दस प्रकार का बताया है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि गोरखनाथ जी के योग का नैतिक आधार अत्यन्त विस्तृत व महत्वपूर्ण है। गोरखनाथ जी के अनुसार जिस दिन व्यक्ति यम और नियम का आचरण करना प्रारंभ करता है उसी दिन से व्यक्ति के कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

उन्होंने गोरखनाथ जी और मां काली की कथा सुनाते हुए कहा कि गोरखनाथ जी अहिंसा के लिए मां काली को भी बलि न लेने के लिए विवश कर दिया।

संचालन व प्रास्ताविकी संस्कृत विद्यापीठ के आचार्य डॉ॰ प्रांगेश कुमार मिश्र ने तथा धन्यवाद ज्ञापन शिविर प्रभारी योगी सोमनाथ ने किया।

इस अवसर पर गोरक्षपीठ के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ जी, डॉ॰ अरविन्द कुमार चतुर्वेदी, डॉ॰ अभिषेक पांडेय, डॉ॰ जयन्त नाथ,

दीपनारायण, शशांक पाण्डेय, द्वारिका पाण्डेय, मंगला त्रिपाठी, विनय
गौतम आदि उपस्थित रहे।